रत्नकुमार सांभरिया की दलित कहानियों में स्त्री–विमर्शः

किरण बाला, शोधार्थी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़(कर्नाटक)

प्रस्तावना

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ नारी मन की मूक वेदना का भी चित्रांकन करती हैं जो दलित के त्रासद जीवन के साथ–साथ अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती परिलक्षित होती हैं।

उनकी कहानियों की अधिकांश स्त्री पात्र परिवेश से जूझती हुई, परिस्थितियों से लड़ती हुई, अपनी मान–सम्मान व मर्यादा का निर्वाहन करने के लिए शोषकों के प्रति टूट पड़ती है। उनकी स्त्री पात्रों में फुलवा, बूढ़ी, मीता आदि पात्र से नयी चेतना संचारित करती हैं।

'आखेट' कहानी की पात्र रेवती जमीन्दार के अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। अपने आबरू पर हाथ डालने आए जमीन्दार का नाक खुरपी से काट देती है। जमीन्दार नानकसिंह गाँव के कितनी मासूम दलित लड़कियों का शिकार कर चुका था। किन्तु रेवती से इस तरह के प्रतिघात को वह सोचा ही नहीं था। रेवती नानकसिंह का नाक काटकर यह एहसास दिलाती है कि गरीबों की इज्जत मंडी में बिकनेवाली चीज़ नहीं है। क्रोधित पति को रेवती समझाते हुए कहती है – "रहने दो। नाक काट आई हूँ, उसकी। नाक काटने से बड़ी सजा तुम दोगे? बात बढ़ेगी। अपनी तौहीन होगी। औरत और गरीब का भगवान भी नहीं है।"

रत्नकुमार सांभरिया की दलित कहानियों में स्त्री–विमर्शः रत्नकुमार सांभरिया की 'शर्त' कहानी स्त्री अस्मिता से रू–ब–रू होती हुई 'दलित' स्त्री की अस्मिता तथा आत्मसम्मान के लिए आवाज़ उठाती है। स्त्री तो स्त्री होती है चाहे वह सवर्ण स्त्री हो या फिर दलित स्त्री। किन्तु स्त्री पर अत्याचार करनेवाले सामंतवादी मानसिकतावाले दलित स्त्री को भोग के वस्तु के रूप में देखते हैं। उन पर अत्याचार कर उन्हें पैसे देकर या ज़मीन देकर डरा–धमकाकर उसका मुँह बंद कर देते हैं। रत्नकुमार सांभरिया इस कहानी में सभी को यह एहसास दिलाना चाहते हैं कि जितना मान–सम्मान अपने बेटियों को दिया जाता है, उतने ही सम्मान के अधिकारिणी दलित स्त्रियाँ भी हैं।

'चपडासन' दलित स्त्री की अस्मिता के प्रति संघर्ष की कहानी है। 'चपड़ासन की मुख्य पात्र मीता अपने पति के मृत्यु के बाद सहानुभूति के आधार पर मिली चापरासी की नौकरी करने ऑफीस आ जाती है। मीता अपने तहसीलदार पति मुनींद्र के मृत्यु के बाद अनुकंपा के आधार पर मिली नौकरी करके अपना परिवार चलाती है। अपने पति के समय जो लोग उसे तथा उसके घरवालों को आदर तथा इज्जद दे दिया करते थे। वहीं असहाय विधवा मीता को हवस भरी निगाहों से उसे पाने का प्रयास करने लगे थे।

'बंजारन' कहानी की रूनाबाई अपनी संतान के प्रति अत्यंत सजग तथा संघर्षमयी दिखाई देती है। उसका संघर्ष समाज से न होकर अपने दो पतियों से था।

रूनाबाई अपनी बेटी सविताबाई को पढ़ा–लिखकर उसका भविष्य संवारना चाहती थी। सविताबाई दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी। रूनाबाई के दो पतियों ने दारू और पैसों के लालच में आकर बेटी की शादी दो बच्चों के पिता से तय किये थे, जो विधुर था उसके पास सरकारी नौकरी, घर और पैसा सब कुछ था। इसका विरोध करने पर रूनाबाई को दोनों मारने लगते हैं। पतियों के इस हरकत से क्षुब्ध होकर गाली देते हुए कहती है – "जिन्दा मक्खी ना निगली जाए। वो लड़का ने अपनी अनपढ़ बीरवानी मार दी। अगर ऊने ऐसी ही पढ़ी–लिखी, लड़की की भूख थी तो अपनी घरवाली ने खुद पढ़ातो। सिम्मान पातो।... दो बालक की माँ पीट–पीटकर घर से निकास दी। तंग आई ने जाहड़ में जिनगानी होम दी अपनी। ना–ना–ना, मैं तो अपनी फूल सी लाड़ो ना ब्याहूँ इसा पापी के।"

निष्कर्ष :– इस तरह से समाज में औरत का शोषण किसी ना किसी रूप में होता रहा है। यदि औरत किसी निम्न जाति से सम्बन्ध रखती है तो उसके शोषित होने का प्रतिशत बढ़ जाता है। वैसे देखा जाए तो समाज ने औरत की कोई जाति या धर्म निश्चित नहीं कर रखी। चाहे वह उच्च वर्ग से सम्बन्ध रखती हो चाहे निम्न वर्ग से उसका शोषण निश्चित है। औरत का औरत होना ही एक तरह से शोषण को निमंत्रण है। लेखक ने स्त्री शोषण को विभिन्न आयामों में प्रकट किया है। एक तरह से उन्होंने समाज की एक दृष्टि पेश की है कि समाज द्वारा औरत को देखने का नजरिया क्या है। जहाँ समाज को यह लगता है कि औरत शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की कोशिश कर रही है उसे वहीं पर दबाने की कोशिश की जाती है। कहीं समाज की वह कोशिश सफल हो जाती है तो कहीं पर सशक्त साहसी महिला के सामने धराशायी हो जाता है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. डॉ. विवेकीशंकर : स्त्री–अस्मिता के प्रश्न और प्रेमचन्द, पृ. 4
2. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–फुलवा, पृ. 24
3. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–कौड़ा, पृ. 45
4. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–गूँज, पृ. 63
5. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–हुकम की दुग्गी, पृ. 128

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...